Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

अभी। दिल्ली दूर है..... (हनोज़। दिल्ली दूरअस्त.....)

Dr. Ramkumar Singh[1]* Dr. Rajendra Singh[2]

[1] Assistant Teacher, Hindi Department, Government Arts College, Sikar, Rajasthan

[2] Associate Professor, Hindi, Government Arts College, Sikar

सार – *लार्ड बेकन की एक प्रसिद्ध उक्ति है कि किसी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता तथा उसकी अन्तरात्मा का दर्षन उसकी कहावतों से ही होता है। किसी देश विशेष की कहावतों (लोकोक्तियों) से उस देश के इतिहास रीति-रिवाज धारणाए, विष्वास, जीवन-पद्धति आदि का ज्ञान हमें होता है। कहावतों के अध्ययन से हमें यह भी जानकारी मिलती है कि उस देश का कितना अधिक सम्बन्ध दंतकथा, इतिहास और काव्य से है। देवी-देवताओं की पौराणिक गाथाओं के असंख्य प्रसंग तथा इतिहास की अनेक घटनाओं की जानकारी हमें इन लोकोक्तियों से मिलती है। ऐसी बहुत सी लोकोक्तियाँ हैं, जिनका सम्बन्ध इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं से है जो बाद में साहित्य, इतिहास और लोगों की जुबान पर चढ़कर लोक में प्रचलित हो गई। ऐसी ही एक कहावत है "अभी ! दिल्ली दूर है....." इसका अर्थ है कि अभी तो मंजिल दूर है। इस कहावत का रोचक इतिहास है जो दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु से जुड़ी हुई है। घटनाक्रम इस प्रकार है -*

सन् 1316 ई. में सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के छोटे पुत्र कुत्बुद्दीन मुबारकशाह खिलजी ने विद्रोह करके दिल्ली का तख्त हथिया लिया और अपने भाइयों को बंदी बनाकर, अंधा करके, ग्वालियर के किले में मार डाला। सन् 1320 ई. में बादशाह कुत्बुद्दीन मुबारकशाह के एक खास हिन्दूमंत्री खुसरों खाँ गुजराती ने उसको मार डाला और स्वयं दिल्ली का बादशाह बन गया। कुछ महिनों बाद पंजाब के गर्वनर 70 वर्षीय गाजी खाँ उर्फ गयासुद्दीन तुगलक (सन् 1321 ई.) ने खुसरो खाँ को मारकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 40 अमीरों की काउन्सिल ने इस तुगलक अमीर को सुलतान बना दिया। इसी से तुगलक वंश की शुरूआत हुई।

----------X----------

गयासुद्दीन तुगलक के समय दिल्ली में एक प्रसिद्ध सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया रहते थे, जिनके मुरीद (शिष्य) महान शायर अमीर खुसरो थे। संत निजामुद्दीन हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों धर्मावलंबियों में बहुत लोकप्रिय थे। किन्तु मौलवी और सुलतान गयासुद्दीन तुगलक सूफी संत निजामुद्दीन औलिया को पसन्द नहीं करते थे। सुलतान बनते ही गयासुद्दीन तुगलक ने एक हुक्मनामा (आदेश) जारी किया, "अमीर और फौजदार हाजिर हों और जितना माल उनके पास है, वो सब सरकारी खजाने में वापिस जमा करवा दें।" तुगलक के मीर मुंषी ने पूछा, "जहाँपनाह। पीरों और फकीरों के लिए क्या हुक्म है? ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया की दरगाह में तो रोज रात को झाड़ू दी जाती है। वहाँ आज का पहुँचा हुआ माल, कल की सुबह नहीं दिखता।" सुलतान क्रोध में आग-बबुला हो उठा और सख्त आवाज में बोला, "पीर और फकीर? ये सब झूठे, मक्कार और धोखेबाज होते है। निजामुद्दीन को कल सुबह मैं देख लूगां। उससे कह दो कि मेरी जीत से पहले शाही खजाने का जितना हिस्सा निजामुद्दीन को पहुँचा हो, वह उसे फौरन वापस कर दें, वरना सजाऐ मौत दी जायेगी।" एक अन्य दरबारी अमीर ने सुलतान के कान भरे, "हुजूर अमीर खुसरो को आदेश दें। वो रोजाना अपने गुरू की दरगाह में हाजिर होते है।" "सुलतान ने जवाब दिया, "हमें न पीर-फकीरों से मतलब और न शायरो से। कह दो फकीर औलिया से कि एक शहर में दो सुलतान नहीं रह सकते। वह (औलिया) अपना ताम-झाम कहीं और ले जाए, तब तक शाही फौज बंगाल की तरफ कूच करती है। हमें दुष्मनों पर फतह हासिल करनी है। हमारी दिल्ली को वापसी तक फकीर औलिया शहर खाली करके अपने मुरीदों के साथ कहीं और चला जाए। ख्वाजा का मुरीद शायर अमीर खुसरो सेना के साथ जायेगा।"

जब सुलतान गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली से सेना सहित बंगाल में था, तो उसे खबर मिली की उसका बेटा जूनह खाँ (मुहम्मद तुगलक) भी वली निजामुद्दीन औलिया की सेवा में उपस्थित रहता है तथा वली निजामुद्दीन ने जूनह खाँ को दिल्ली का बादशाह बनने की भविष्यवाणी की है तो सुलतान तुगलक औलिया से और अधिक नाराज हो गया और बंगाल से कहलवाया कि – "या शेख आंजा बाशद या मन" (आप यहाँ पधारें या मैं वहाँ आऊँ)।

आखिर सालभर बाद सुलतान गयासुद्दीन तुगलक विजय के नगाडे बजाता हुआ यमुना नदी के किनारे दिल्ली शहर के सामने यानी ग्यासपुराबस्ती के सामने अफगानपुर आ पहुँचा। निजामुद्दीन के शिष्यों को जैसे ही यह समाचार मिला वे उनसे तुरन्त मिले और प्रार्थना कि "शहजादा जूनह खाँ ने, यमुना पार सुलतान के स्वागत के लिए एक महल बनया है कल सुबह सुलतान उसमें आयेगा। दिल्ली में उसके स्वागत को एक रात बाकी है। ख्वाजा साहब हमें अपनी जान से ज्यादा आपकी जान प्यारी है। सुलतान के दिल्ली में आने से पहले ही आप फौरन यहाँ से निकल जाइये।" यह सब सुनकर भी ख्वाजा के चेहरे पर कोई शिकन न दिखाई दी और तसल्ली पूर्वक बोले, "हमें किसी से क्या लेना देना। हम शहर के किनारे पड़े है। खल्के खुदा की खिदमत करते है। सबकी सलामती की दुआ करते हैं। हनोज़ ! दिल्ली दूरअस्त।" अर्थात दिल्ली अभी दूर है।"

आगे का घटनाक्रम इस प्रकार है- दिल्ली पहुँचने पर सुलतान गयासुद्दीन ने अपने पुत्र जूनह खाँ को अफगानपुर में अपने लिए एक नये महल के निर्माण की आज्ञा दी। जूनह खाँ ने तीन दिन में ही महल का निर्माण करवा दिया। धरातल से कुछ ऊपर रखे हुए लकड़ी के खंभों पर इस महल का आधार था और स्थान-स्थान पर इसमें यथासम्भव लकड़ी का ही प्रयोग किया गया था। सुलतान के वास्तुकार अहमद इब्न अयार ने, जिसे बाद में 'ख्वाजाजहाँ' की उपाधि मिली थी, ऐसी योजना पूर्वक इस महल के आधार का निर्माण किया था कि स्थान विशेष पर हाथी का पैर पड़ते ही सारा महल गिर पड़े।

अगले दिन प्रातःकाल सुलतान इस महल में आकर रूका। जूनह खाँ ने अपने पिता को भोज दिया। भोजनोपरांत जूनह खाँ ने सम्राट से वहाँ हाथी लाने की प्रार्थना की और एक सजा हुआ हाथी वहाँ भेजा गया। उस स्थान विशेष पर हाथी को लाया गया। महल में हाथी के प्रवेश करते ही सारा महल सुलतान गयासुद्दीन और उसके छोटे बेटे (महमूद) के ऊपर गिर पड़ा। जूनह खाँ ने सुलतान को निकालने के लिए कुल्हाडे और कस्सियाँ लाने की आज्ञा दी। परन्तु इन औजारों को विलम्ब से लाने का इशारा भी कर दिया। परिणाम इसका यह हुआ कि खुदाई आरम्भ होते समय सूर्यास्त हो गया था। खोदने पर सुलतान अपने पुत्र पर झुका हुआ पाया गया, मानो वह उसको मृत्यु से बचाना चाहता था। कुछ लोगों का कथन है कि सुलतान उस समय भी जीवित था। परन्तु उसका काम तमाम कर दिया गया। रात्रि में ही सुलतान का शव तुगलकाबाद के कब्रगाह में दफ़ना दिया गया। यानी सुलतान गयासुद्दीन कभी दिल्ली पहुँच ही नहीं पाया। इसी से यह कहावत बनी कि – "अभी। दिल्ली दूर है।" इस घटना का वर्णन तत्कालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी और इब्नबतुता ने भी किया है। बरनी आसमान से बिजली गिरने से महल का गिरना और सुलतान का मरना बताया है। इब्नबतुता ने शहजादा जूनह खाँ को दोषी बताया है। आधुनिक इतिहासकार डॉ. ईश्वरी प्रसाद का मत है कि यह जूनह खाँ द्वारा रचे गये षड़यंत्र का परिणाम था। यह घटना सन् 1325 ई. की है। कहते हैं कि ख्वाजा निमामुद्दीन का इंतकाल भी उसी समय हुआ था। उस समय अमीर खुसरो बंगाल की फौजी मुहिम से दिल्ली लौटकर आ रहा था। अमीर खुसरो लखनौती में था, उस वक्त अचानक खुसरो को अपने दिल में महसूस हुआ कि कोई अनहोनी घटना घटित हुई है। खुसरो ने बैचेन होकर अपने घोडे की गति को तेज कर दिया। दिल्ली पहुँचकर जब उन्होंने अपने गुरू निजामुद्दीन के विसाल (मौत) की खबर सुनी तो वह पागलों की भांति दौड़ते हुए, रोते हुए उनकी कब्र के पास जमीन पर गिर पडे। अमीर खुसरो को औलिया के दूसरे शिष्यों ने कब्र पर जाने से पहले ही रोक लिया। अमीर खुसरो की अपने प्रति बेपनाह मोहब्बत को देखकर ख्वाजा निजामुद्दीन कहा करते थे, "खुसरो को मेरी कब्र पर हरगिज न आने देना, कहीं ऐसा न हो कि उसकी मुझसे रूहानी मोहब्बत मुझे कब्र से बाहर आने पर मजबूर कर दे। कब्र फट जाए और इस्लामी शरीयत की अवहेलना हो। मैं ऐसा हरगिज नहीं चाहता।" अमीर खुसरो वहीं रूक गये। खुसरो ने अपने बाल बिखेर लिए, कपड़े फाड़ डाले और बेहद करूण भरी आवाज में यह फारसी का शेर कहा -

"सुभान अल्लाह, आफ़ताब दर जेरे जमीन ओ खुसरो जिन्दा।" अर्थात "हे भगवान। सूरज डूब कर जमीन के नीचे छुप गया है और खुसरो अभी तक जिन्दा है।" खुसरो ने इसके बाद अपनी मातृभाषा हिन्दवी में बेहद करूण भरी आवाज में उनकी मजार पर यह मर्सिया पढ़ा। मर्सिया (मृत्यु गीत/षोक गीत) फारसी भाषा की रिवायत में मिलता है पर अमीर खुसरो ने पहली बार हिन्दवी भाषा में प्रयोग किया। इस मर्सिये का अन्तिम शेर (दोहा) बेहद लोकप्रिय है और लोगों की जुबान पर आज भी चढ़ा हुआ है -

"गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।"

इसके बाद अमीर खुसरो के पास जो कुछ भी धन-सम्पदा थी, उन्होंने उसे लुटा दिया और स्वयं गुरू निजामुद्दीन की मजार पर काला कपड़ा पहनकर शोक में जा बैठे। अपने गुरू हजरत निमाजुद्दीन औलिया के देहांत के छः माह बाद सन् 1325 ई. में खुसरो का देहांत हो गया और खुसरो को उनके गुरू के बगल में ही दफनाया गया।

सन्दर्भ

1. अमीर खुसरो: एक बहुआयामी व्यक्तित्व (2018 ई.)-प्रदीप शर्मा खुसरो, साक्षी प्रकाशन एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

2. इब्न्बतूता की भारतयात्रा (1997 ई.)-सं. मदनगोपाल, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, बसंत कुंज, नई दिल्ली।

3. अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य (2004 ई.)-भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत अमीर खुसरो (1987 ई.) - सं. डॉ. मलिक मोहम्मद, पीताम्बर पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली।

Corresponding Author

Dr. Ramkumar Singh*

Assistant Teacher, Hindi Department, Government Arts College, Sikar, Rajasthan

ramkumarsingh358@gmail.com